विकासखण्ड बहादुरपुर मत्स्य उद्योग का विकास : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 राधेश्याम राम*

मत्स्य एक उत्तम प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ है, तथा इसका पर्याप्त मात्रा में उत्पादन किया जा सकता है। जनसंख्या में हो रही लगातार वृद्धि तथा उसका परिणामस्वरूप हो रही रोजगार तथा भोजन के विकट समस्या के समाधान करने के लिए ऐसी योजनाओं को चलाना आवश्यक है, जिनकी सहायता से खाद्य पदार्थों के उत्पादन के साथ–साथ भूमिहीनों, बेरोजगारों तथा निर्धन व्यक्तियों आदि को रोजगार प्राप्त हो सके। अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड बहादुरपुर को खुशहाल बनाने के लिए खाद्य पदार्थों के अधिकतम उत्पादन के लिए सुलभ संसाधनों का समुचित उपयोग और विशेष रूप से उसका सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान बहुत जरुरी है।

प्रस्तावना–मत्स्य पालन वर्तमान में उत्तम आय तथा उत्तम भोजन का स्रोत बन गया है। अतः यह आवश्यक है कि इस व्यवसाय में मछलियों के उत्पादन और उसमे सम्बंधित जानकारी दी जाय। मत्स्य पालन उद्योग के सुनियोजित संचालन एवं ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों का पुरा उपयोग करने के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना में मत्स्य पालन विकास अभिकरणों की स्थापना की गयी थी। नीली क्रांति के प्रगति में उल्लेखनीय भूमिका रही है (योजना, 2013)। पंचवर्षीय योजना में मत्स्य स्थानों का निर्माण मछुआरों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम को शुरू किया गया। बंधा हुआ पानी मत्स्य उद्योग के लिए विशेष उपयोगी होता है क्योंकि इसमें मछली पालन और मछली पकड़ना दोनो कार्य हो सकते हैं, किन्तु बहते हुए पानी में मछली पकड़ना ही संभव है, मछली पालन नहीं (सिंह, मंजुला एवं सिंह, आर.एन.,1993)।

अध्ययन क्षेत्र का चुनाव

प्राचीन काल से ही इलाहाबाद जनपद अपनी विलक्षण संस्कृति तथा सभ्यता के लिए जाना जाता रहा है। विशाल जनसंख्या तथा पिछड़ी अर्थव्यवस्था एक प्रमुख समस्या यहाँ विद्यमान है। अध्ययन क्षेत्र का इलाहाबाद नगर के समीप होने के बावजूद यहाँ के लोगों के जीवन स्तर, आर्थिक जीवन में कोई सुधार नहीं हुआ है। मत्स्य पालन को विकसित करने की पर्याप्त सम्भावनायें यहां विद्यमान हैं।

(सहायक आचार्य) भूगोल विभाग, नेहरू ग्राम भारती (डीम्ड विश्वविद्यालय), इलाहाबाद

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य–

- विकासखण्ड बहादुरपुर में पाए जाने वाले मत्स्य संसाधन का समाकलन करना।
- विकासखण्ड बहादुरपुर में तालाब तथा उसमें मत्स्य उद्योग का अध्ययन करना।
- विकासखण्ड बहादुरपुर में मत्स्य उद्योग आधारित आर्थिक स्थिति का आकलन करना।

विधि तन्त्र–अध्ययन क्षेत्र में विकासखण्ड बहादुरपुर के अध्ययन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों ही आंकड़े को आधार बनाकर शोध–पत्र का कार्य पूरा किया गया है। प्राथमिक प्रकार के आंकड़ों का मूल आधार क्षेत्र सर्वेक्षण रहा है। जबकि द्वितीयक आकड़ो को विकासखण्ड कार्यालय से सम्बंधित विभागों से संपर्क करके लिया गया। सामान्य संसाधनों की जानकारी गजेटियर, सांख्यिकीय पुस्तिका, भारतीय जनगणना पुस्तिका से प्राप्त की गयी है। विकासखण्ड बहादुरपुर का मानचित्र स्थला.ति मानचित्र(G/15) लखनऊ सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्राप्तकर तैयार किया गया है। इसके अलावा अनेक प्रकार के प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, महान लेखकों को व्याख्यान, जनपद से सम्बन्धित समय–समय पर प्रकाशित होने वाली विकास–पुस्तिका से आवश्यकता अनुसार आकड़ें प्राप्त किये गए हैं। वहीं शोध को विश्लेषणात्मक बनाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र–अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड बहादुरपुर उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद के मध्य भाग में स्थित है, जिसका आधार दक्षिण की तरफ है। विकासखण्ड

बहादुरपुर का भौगोलिक विस्तार 2509′ उत्तरी अक्षांश से 25031′ उत्तरी अक्षांश और 81053′ पूर्वी देशान्तर से 8204′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह विकासखण्ड पूर्व से पश्चिम की तुलना में उत्तर से दक्षिण अधिक विस्तृत है। सर्वेयर जनरल ऑफ इण्डिया के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 264.66 वर्ग किमी0 है। इस विकासखण्ड की सीमा का निर्धारण पश्चिमी तथा दक्षिणी भाग गंगा नदी द्वारा होता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रशासनिक इकाई एक महत्वपूर्ण बिन्दु है जो शोधकार्य में अध्ययन क्षेत्र की मुख्य पहचान प्रस्तुत करती है, जिसका अध्ययन आवश्यक होता है। प्रशासनिक दृष्टि से यह विकासखण्ड 18 न्यायपंचायतों में विभक्त है। विकासखण्ड का मुख्यालय हनुमानगंज है।

अध्ययन तथा विश्लेषण–विकासखण्ड बहादुरपुर में मत्स्य पालन उद्योग के लिए विभिन्न प्रकार के पर्याप्त जल संसाधन विद्यमान हैं। मुख्यतः बंधा हुआ जल क्षेत्र मत्स्य पालन के लिए काफी उपयोगी होता है। मत्स्य पालन तथा इस क्षेत्र से जुड़े मछुआरों के उत्थान के लिए अनेक महत्वपूर्ण योजनायें चलायी जा रही है, जिनका आपेक्षिक लाभ भी समाज को मिल रहा है (तिवारी, आर.सी., 2008)।

अध्ययन क्षेत्र में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए विकासखण्ड स्तर पर अंगुलिकाओं का वितरण किया जाता है लेकिन इस अंगुलिकाओं के वितरण में भी अनियमितता पायी जाती है। इन मत्स्य सहकारी समितियों का मुख्य रूप से क्षेत्र का भ्रमण उपयुक्त मत्स्य पालन हेतु स्थान का चयन करके आवश्यकता के अनुरूप अंगुलिकाओं का वितरण करना चाहिए। इस विकासखण्ड में विशेष रूप से मछली पकड़ने का कार्य गंगा तथा उसकी उप नदी बैरगिया, अगुलहार, रानावती में होता है। इसके अलावा तालाबों में भी मछली पकड़ने का कार्य होता है। गंगा नदी में मुख्य रूप से मछली पकड़ने का कार्य यहाँ के मछुआरों द्वारा किया जाता है जिसको बेच कर अपना भरण–पोषण करते है। इसमें मुख्यतः *रोहू, सिंही, थलई, पोठई, गिरई, कोझ एवं पियासी* मछली मिलती है। मत्स्य पालन तकनीक के विषय में विकासखण्ड बहादुरपुर से निम्न उपयोगी सुझाव दिए जा सकते हैं।

तालाब का चुनाव

मत्स्य पालन के लिए 0–2से 2 हेक्टेयर तक के ऐसे तालाब का चुनाव किया जाना होगा जिसमे वर्ष भर या कम से कम 8से 9 महीनें जल भरा रहे। तालाबों में सदा अपेक्षित जल स्तर बनाये रखने के लिए जल–आपूर्ति के अन्य साधन भी उपलब्ध हों। तालाब में वर्ष भर 1–2 मीटर पानी अवश्य रहे। उन्हीं तालाबों का चयन हो जिनमें मत्स्य पालन आर्थिक दृष्टि से लाभकारी हो।

तालाबों का सुधार

अधिकांश तालाब में बांधों का कटा–फटा या ऊँचा–नीचा, पानी आने जाने के रास्तों का न होना, दूरवर्ती क्षेत्रों से बहाव में अधिक पानी आने की सम्भावना बने रहना आदि कमियॉ पायी जाती हैं जिन्हें सुधार कर दूर किया जा

सकता है। तालाब के बीच यदि कहीं टीले हों तो समतल बनाने के लिए उनकी मिट्टी बांधों पर डाल देनी चाहिये। पानी के निकास और पानी आने के स्थानों पर पक्की जाली की व्यवस्था हो ताकि आवांछनीय मछलियॉ इस तालाब में न आयें तथा तालाब में पाली जाने वाली मछलियॉ बाहर न जा सकें। तालाब में जो सुधार की प्रक्रिया है यह मई, जून तक अवश्य ही हो जानी चाहिए।

आवांछनीय जलीय पौधा उन्नमूलन

पानी की सतह पर स्वतंत्र रूप से उगने, तैरने वाले पौधे जलकुम्भी, पिस्टिया, अजोला, आदि पौधे अथवा जड़ जमाकर सतह पर तैरने वाले कमल आदि पौधे या जल में डूबकर जमने वाले जड़दार हाईड्रिला, नाजाल आदि पौधे तालाब में होने पर मछलियों के उत्पादन को कम कर देते हैं। इनकी अधिकता से मछलियों को पानी में घूमने, तैरने में असुविधा होती है,और सूर्य की किरणे भी पानी के अन्दर नहीं पहुँच पाती हैं। इन पौधों को साफ कर तथा तालाब में अंगुलिकाओं को डालना चाहिये। इस प्रकार इस क्षेत्र में इन सुझावों को उपयोग में लाकर मत्स्य पालन किया जाएगा तो निश्चित ही मत्स्य उत्पादन में बढ़ोत्तरी तथा क्षेत्र का आर्थिक विकास सम्भव हो पायेगा।

इन नदियों में विशेष रूप से सिंही, भलुई, गरई, पोठई, मोझ एवं रोहू आदि मछलियाँ पायी जाती हैं, जो उत्पादन एवं व्यापारिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण होती हैं। इनके विकसित अंगुलियों की आपूर्ति कर मछलियों के उत्पादन को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। रोहू को ग्राहकों की रूचि एवं बाजार मूल्य के आधार पर सर्वोत्तम मछली माना जाता है। इन मछलियों के विकास के लिए इन नदियों की परिस्थितियाँ अनुकूल हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उचित समय पर उनके अंगुलिकाओं की अनुकूल मात्रा में वृद्धि करने से मछुआरों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, क्योंकि इस मछली का मूल्य अन्य मछलियों की तुलना में अधिक होता है।

इन नदियों के अतिरिक्त इस क्षेत्र के अन्य भागों में जहाँ जल जमाव रहता है, उन क्षेत्रों पर तालाब का निर्माण करके मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है,क्योंकि तालाब में मत्स्य पालन करना नदी नालों की अपेक्षा सुगम होता है और अच्छी प्रकार की मछलियों का उत्पादन किया जा सकता है, बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है।

विकासखण्ड बहादुरपुर में मत्स्य पालन को अधिक सफल एवं सार्थक बनाने हेतु इसमें पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। सर्वप्रथम मत्स्य क्षेत्र का निर्धारण कर उनका विकास करना, मत्स्य पालकों को प्रशिक्षण देना, बाजार तंत्र में सुधार करना एवं मत्स्य बीज (अंगुलिकाओं) की आपूर्ति आवश्यक है। साथ ही साथ मत्स्य के उचित विकास हेतु मत्स्य सहकारी समितियों का निर्माण कर उसकी सहायता से इस क्षेत्र में मत्स्य को उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। साथ ही साथ एक मत्स्य डिब्बा बन्द केन्द्र की भी स्थापना करना श्रेयस्कर होगा। इस प्रकार इस पिछड़े क्षेत्र में मत्स्य पालन का विकास करना ग्रामीण विकास की दिशा में एक कारगर कदम होगा।

निष्कर्ष

विकासखण्ड बहादुरपुर में मत्स्य पालन को विकसित करने की पर्याप्त सम्भावनायें विद्यमान हैं, इस विकासखण्ड के दक्षिणी भाग में नदियों का विस्तार पाया जाता है। इसके ठीक दक्षिणी भाग में गंगा नदी प्रवाहित होती है, जिसमें मछली पकड़ने का काम यहाँ के मछुआरों द्वारा किया जाता है। यही नहीं इस क्षेत्र में स्थित गंगा नदी के छाड़न के किनारे स्थिति गांवों को इन नदियों में मत्स्य पालन करने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। विशेषतः बेरोजगार युवकों को मत्स्य विभाग द्वारा ऋण प्रदान कर इस क्षेत्र में मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है। यही नहीं अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्राकृतिक तालाब एवं बड़े–बड़े गडढ़े भी हैं, जिनमें मत्स्य पालन का विकास किया जा सकता है।

Resume .''विकासखण्ड बहादुरपुर (इलाहाबाद, उ०प्र०) का समन्वित ग्रामीण विकास : एक लघु–स्तरीय नियोजन''

सन्दर्भ सूची

1. योजना, (अप्रैल 2013):'नयी दिल्ली, पृ0–19।
2. सिंह, मंजुला एवं सिंह, आर.एन. (1993): ''समन्वित ग्रामीण विकास के विविध आयाम'', उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 29, संख्या 1–2, पृ. 21 व 27।
3. तिवारी, आर.सी. (2008): भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 220–225।